B.A. History Hon's, Part: I
Paper: I, Unit-III, Date: 23.11.2020
Lecture N - 21
Lession: कुषाणों की भूमिका

कुषाणों की उत्पत्ति और प्रसार का भी लम्बा इतिहास माना जाता है। चीनी अनुश्रुतियों से अवगत होता है कि मध्य एशिया की खानाबदोश जाति ह्यूंग-नू, वू-सुन और यू-ची पश्चिम चीन पर आक्रमण कर चीनी किसानों के जान-माल को लूट लिया करती थी इसलिए हान वंश के सम्राट शी-हुआंग ने इन खानाबदोश जातियों से पश्चिमी चीन के रक्षार्थ तीसरी शताब्दी ई० पूर्व में विशाल चीन की दीवार का निर्माण करवाया। फलतः मध्य एशिया की खानाबदोश और पशुपालक जातियों के लिए चीन की पश्चिमी सीमा बन्द हो गयी। चीनी अनुश्रुति के अनुसार "यू-ची जाति पश्चिमी चीन की सीमा से खदेड़े जाने के बाद दक्षिण-पश्चिम की ओर बढ़ी और शक जाति को पराजित कर बैक्ट्रिया (तरहिया) पर आधिपत्य कर लिया।" कनिष्क कुषाण राजवंश का तीसरा और सबसे प्रभावशाली सम्राट था। वह विम-कुडफिसस के बाद कुषाण जाति के दूसरे राजघराने का प्रथम शासक हुआ था। मौर्य ~~के~~ पतन के बाद सर्वप्रथम कुषाणों ने ही एक बड़े साम्राज्य की स्थापना की। हम यह कह सकते हैं कि कुषाणों ने भारत के विभिन्न भागों का राजनीतिक एकीकरण किया।

शांति स्थापना: यूनानियों, सिथियनों और पार्थियनों के आपसी संघर्ष से उत्तरी भारत में अशांति का काल शुरू हो गया था किन्तु कुषाणों ने एक सुव्यवस्थित प्रशासन की बुनियाद पर शांति स्थापित किया।

वाणिज्य एवं व्यापार: कुषाण काल में चीन, मध्य एशिया और रोमन साम्राज्य से भारत का व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित हुआ। कुषाण राजाओं द्वारा तैयार करवाये गये बहुसंख्यक सोने के सिक्के तत्कालीन आर्थिक सुदृढ़ता का परिचय देते हैं। भारत में रोम से अत्यधिक सोना आता था।

महायानवाद का उद्भव और विकास: कुषाण काल में बौद्ध धर्म का एक नया रूप हमारे सम्मुख आता है। हीनयान के स्थान पर महायानवाद का विकास इसी काल में हुआ। महायानवाद का प्रचार मध्य एशिया और चीन में कुषाणों के काल में हुआ।

धार्मिक सहिष्णुता: कुषाण राजाओं ने किसी धर्मविशेष का पक्षपात नहीं किया। कनिष्क स्वयं बौद्ध था तथा वासुदेव ने शैव धर्म स्वीकार किया। परन्तु दूसरे धर्मों के प्रति उन्होंने सहिष्णुता की नीति का पालन किया। उन्होंने धार्मिक विश्वास किसी पर थोपने का प्रयत्न नहीं किया।

मूर्तिकला: भारतीय कला के इतिहास में कुषाण काल का एक महत्वपूर्ण स्थान है। बुद्ध को मानव रूप में प्रस्तुत करने का रिवाज कुषाणों के समय से ही शुरू हुआ। मूर्तिकला की दो शैलियों का विकास क्रमशः गान्धार और मथुरा केन्द्रों में हुआ। स्वात घाटी से प्राप्त सिस्ट पत्थर का प्रयोग बुद्ध की बैठी मूर्तियों में कमलासन, सिर के बाल जो लहरियादार हैं जिनका समापन बीच में एक गाँठ के रूप में हुआ। गांधार के शिल्पियों ने बुद्ध को अपोलो देवता के समान प्रस्तुत करने का प्रयास किया। बुद्ध के जीवन सम्बन्धी दृश्यों के उल्लेख में मानवीय भावों को प्रधानता दी गई है। तपस्या करते हुए बुद्ध की उपवास ग्रस्त कंकाल मूर्ति न केवल शारीरिक शास्त्र की ~~सजीव प्रतिमूर्तियाँ हैं~~। दृष्टि से तथ्यात्मक है, बल्कि तपस्या के आदर्शों को भी चरितार्थ करती है। गंधार शैली का काल पहली शती ई० और चौथी शती ई० के बीच निश्चित किया जाता है।

मथुरा शैली: मथुरा के शिल्पियों ने भी अपना विषय बुद्ध और उनके जीवन की घटनाओं से ही लिया। सफेद चित्तीदार लाल पत्थर का प्रयोग, विशालता, मुण्डित मस्तक, माथे

ने कपड़े को दिखलाने के लिए गहरा निशान आदि। इन मूर्तियों के दाहिने पर प्रायः वस्त्र नहीं दिखाया जाता था। बुद्ध मूर्तियों का निर्माण पद्मासन नहीं बल्कि सिंहासन पर होता था। मूर्ति का प्रभामण्डल सादा रहता था। विद्वानों का कहना है कि मथुरा कला पर गंधार का प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा। डॉ. वोगेल के अनुसार मथुरा की कला में भाव की कल्पना अथवा अलंकरण प्रकार सर्वथा भारतीय है। इसमें संदेह नहीं था कि मथुरा के शिल्पियों को गंधार शैली का ज्ञान था, उससे उन्होंने प्रेरणा भी ली होगी किन्तु मथुरा में बौद्ध मूर्तियाँ स्वतंत्र रूप से बनीं। मथुरा के बोधिसत्व की तुलना पारखम यक्ष से की जा सकती है। इस तरह स्पष्ट रूप से कह सकते हैं कि कुषाण काल में जहाँ एक तरफ भारतीय परम्परा को अधिक अपनाया गया तो दूसरे केन्द्र पर पश्चिमी शैली की प्रधानता थी।
वास्तु कला: कुषाण राजा महान निर्माता भी थे। कनिष्क के दरबार में यूनानी इन्जीनियर अजेसिलांस की उपस्थिति इस बात की पुष्टि करती है कि कुषाणों की वस्तुकला की उन्नति में रुचि थी। इन राजाओं ने सिरसुख, कनिष्कपुरी, हुष्कपुर आदि नगरों का निर्माण किया।
साहित्य: कुषाण राजाओं के काल में संस्कृत साहित्य का पुनरुत्थान हुआ। महायान धर्म के प्रचारार्थ इसी भाषा को चुना गया। कुषाण दरबार में अश्वघोष, वसुमित्र, नागार्जुन, चरक, मंथर आदि विद्वान एवं दार्शनिकों को आश्रय मिला।
सिक्के: कुषाण राजाओं ने सोने और चाँदी के सिक्कों का प्रचलन किया। कुषाण सिक्कों का एक रुचिकर लक्षण है पृष्ठ भाग पर यूनानी, रोमन, ईरानी और भारतीय देवी-देवताओं की अपनी विशेषता है उन प्रदेशों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो कुषाणों के राजनीतिक प्रभावान्तर्गत आ गये थे। इन सिक्कों का तौल रोमन पद्धति पर आधारित था। जिससे स्पष्ट होता है कि सोने के सिक्कों का प्रयोग अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में होता होगा।
शक-सम्वत: कनिष्क ने अपने राज्यारोहण के उपलक्ष्य में शक-सम्वत अथवा कनिष्क सम्वत् की स्थापना 78 ई० में की।
सामाजिक व्यवस्था: कुषाणों का आधिपत्य और शासनकाल सामाजिक व्यवस्थाओं के लिए सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है। इस काल में विदेशी जातियों को भारतीय धर्म और समाज में अंगीकार किये जाने के कारण भारतीय वर्णव्यवस्था में ही नहीं जाति-प्रथा में भी छूट और ढील दिया जाने लगा। रूसी इतिहासकारों के अनुसार "यूनानी बाल्हीक और मध्य एशियाई खानाबदोश जातियों का कुषाण साम्राज्य में संगम ईरान से लेकर भारत तक एक मिश्रित समाज की स्थापना हुयी जिसमें विभिन्न नस्ल और इलाकाई संस्कृति एक दूसरे से घुल-मिल जाने के कारण पूर्वी दुनिया में एक नयी सांस्कृतिक विकास को जन्म दिया।"
हम यह कह सकते हैं कि निष्कर्ष रूप में कुषाणकालीन शासनकाल में भारतीय राजनीतिक ही नहीं, सामाजिक व्यवस्था भी प्रभावित हुई थी।

डॉ० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी० बी० कॉलेज, जयनगर